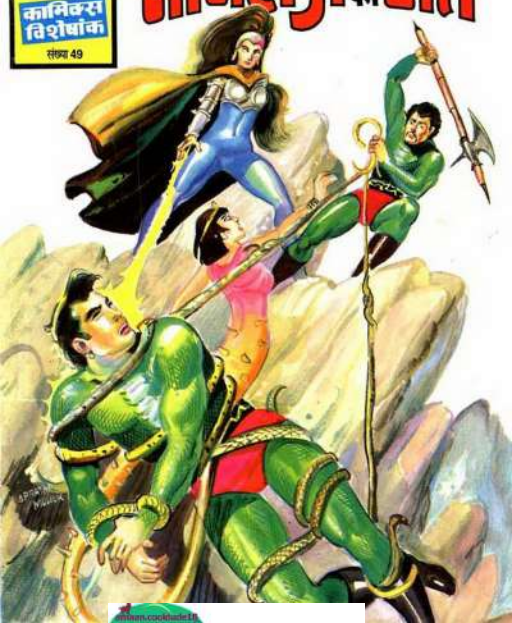


**राज**

कामिक्स  
विशेषांक

संख्या 49

# नागराज का अंत



देखने वाले धाम में, अपने-अपने पङ्कते दिख-

और जो नहीं देख सकते, वे बंध कर लें अपनी-अपनी अ-पीर  
अपने- अपने कि अब होवे काफ है...

# नागराज का अंत

लेखक: अनुपम सिन्हा, इनीफ अजहर • चित्र: अनुपम सिन्हा • वृत्तिका: विलेव कुमल-सुलेख शर्मा • सुनील पटवडे • संपातक: मनीष गुप्ता

हा हा हा... अब तुम्हारा मौत से  
बचाना असंभव है नागराज, क्योंकि जिस मंत्र  
से तुम अपने के साप छिपके हुए हो, उससे तुम तभी  
मुक्त सकते हो जब तुम्हारे शरीर से तुम्हारी सभी  
रक्तान कला ही जल जा हा हा हा ।

ओह ! तो जिस किलर के कहने पर मानवी  
ने मुझे यहाँ ल फँसना है । लेकिन अगरने ऐसा  
क्यों किया, यह मैं उसने उकर पूछना तब, अब  
मैं यहाँ से बचकर निकल आऊंगा ।

लेकिन ऐसा हास कैसे ?  
क्योंकि कुछ पहले मनु ही वो  
मिजद पूरे हो जायेंगे...

... और ऐसा होते ही  
मेरा सिद्धान्त लेक्य सेट की  
इसी लेक्य मने चलेगी, और  
मुझे राय में बहुत डारोती ।



अचानक- बिजली सी कौंध गई  
अपनाउ के अग्निपत्र में-

खाल ! फिर किल के  
शब्दों में मेरे बचाव का लीका  
धुन टूटत है, मैं बच सकता हूं  
अगर मैं सिद्ध हो चिपकी अपनी  
खाल दुलाले में सफाव हो जाऊं  
है...

... और हेल का ... वरिष्ठों की  
लेना मेरे लिए मुक्ति विद्योपायों का सारा  
गर्ही है... सचों के सगरी मुलों के सार-  
सब मुठकों यह भी धुन है...



... कि मैं  
अपनी केंचुली बदल  
सकता हूं।  
अब सिर्फ  
इलाज ही सफा है...

... कि मैं अपनी बेल्ट के  
अंदर सूत्र का रूप में सारा  
अपनाऊंगा, धुने, मेला अदि  
बिनाकर पेटाक बदलूँ।



... और फिर उधुलकर, जलने से थिरा  
धुन, दीवार पर चिपक जाऊं।



अभी एक घण भी नहीं गुजरा था कि—

फिर नागराज दीवार पर फैला हुआ उस मौत के मुंह से बंदूक निकल—



उफ़! उफ़! के धुंधी बदलने का उपाय अगर एक घण बाद हुआ तो मैं सब के एक बेर के रूप में चला होता।



तभी—  
 बहुत खूब नागराज, तुम्हारी अनेकी धुंधी ने तुम्हें एक विचित्र मौत से बच लिया। लेकिन ये मृत मरणात्मक कि अब काल का समय तुम्हारे ऊपर से हट गया, तुम दुरा मंथिर से सिद्ध बचका नहीं निकल सकते तुम्हें मरना ही बा...  
 हर हक में मरना होना नागराज! हा हा हा!



लेकिन मौत के दर से मुझे यहीं हारकर नहीं बैठ गया। अंततः वादे के भी हो मुझे यहाँ से बंदूक निकालने का प्रयास तो करना ही होता।



मिल किन्तु अपने ही सन्मार्ग में बैठी ना केवल मेरी अनिधिधियों पर अब सबे हुए है बल्कि साथ ही दुप के हाथ से हीरकम भी बचती आ रही है कि मैं यहाँ से सिद्ध बंदूक का निकाल सकूँ...

एक तरफ बंधू चला नागराज—

कुछ ही कदम आगे बढ़ने के बाद  
बुरी तरह ठोकर—

ओह! लगते थे सफल एटिंग  
की सोरी कादर से बंद हो गए...

... पीछे बाल  
ही!



मैं बचने तुल्य करने में बंद हो  
चुका हूँ। लेकिन मुझे यहां बंद  
क्यों किया गया है?

सकल को जब अपने  
सकल को जब मिले तो उसके  
सबे जिनसे मैं एक लंबे सिद्धांत होई  
गई—

और मेला में कहेज इस लोहे की  
हीला पर लर्य की शक्ति कुचर  
की लरक रोककर। ओउउह!



ओह! दोहों लरक की मे  
हीलापों से बदल निकल  
ले हूँ, जो कुछ ही जल में  
आपस में मिल जायेंगे—  
— और अब मैं यहां लरक  
रहा तो ये बदल मेरा  
कीला बलकर लरक  
हुंसे।  
लेकिन मैं इनसे बचू  
कैसे? यहां जा ले कोई  
बलकर है ना सिद्धांत।  
अब तो मुझे अपने  
को बलके के लिए कुचर  
की लरक बलकर हीला।



ओउउक! इस लोहे की हीला में  
कंपर प्रकटित करके मिल किल्य  
अब भी लही है जहां  
मे इस बल का पुनराल हंतजकअ  
मैं बलकरपरी का कंधा  
राल है कि मैं हीला पर रोककर  
उचर की लरक न बंद लरक।  
उचर को हूँ लेगी  
अब भी लही है जहां  
मैं बलकरपरी का कंधा  
राल है कि मैं हीला पर रोककर  
उचर की लरक न बंद लरक।  
लरक भूला जक।



लेकिन ऊपर की तरफ बढ़ना तो ... और तेजी से बढ़ने से मेरे हाथों को कोई मुकामन या चूड़ों से इसके किला मुझे अपनी वेपल की मदद लेनी होगी।

... और इससे दो टुकड़ों में बंटकर उड़ते अपने हाथों में लपेटा—



नागराज ने तुलना ही अपनी कसर से बोल अपना की—

और इससे काटों ज्यादा तेजी से एक व दूसरे की तरफ बढ़ रहे थे तेजी—



और फिर— तेजी से एक-दूसरे की तरफ बढ़ते तेजी अपना में मिलें, मुझे इससे बढ़ते ही ऊपर चढ़ना है।

मौल को माल देने के किला तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ रहा था नागराज—

लेकिन फिर भी नागराज मौल के हाथों से निपटवनी चीज लेने के लिए उस आवा से जुटा हुआ था—

जगतराज के प्रयास को देखती  
सिम किलर ने एक जोरदार  
ठहाका लगाया—

हा हा हा ! और  
तेज और तेज  
जगतराज ...

संवाद-

ड्राक है ही ड्राक  
लेकिन कभी शीत को  
झल देकर यहां पहुंचने में  
सफल हो गया, और ड्राक है  
इस बात का भी, यहां धूल की  
दौलत पर कब्रें नहीं बौद्ध रहा और  
नेमा दुर्बलिय हुआ कि सिम  
किलर को मैजों से बचकर मेरे  
यहां पहुंचने की कार्य सम्पन्न  
आ थी।



... देखें, जिनकी  
और शीत के इस खेल  
में दुर्जीतल है ठा शीत!  
हा हा हा !

कुछ पलों बाद ही सिम किलर के हलक से  
उबलने टहाकों पर माले 'ब्रेक' करा गए—



ये क्या ?  
जगतराज बच  
सिकल !



अब इस रोडमदान से बाहर निकलकर  
मूमे, तुमकी हर उम्मीदों पर वाली किरल  
है। उठ !

रोडमदान उरक दकर ...



... जगतराज मंदिर से बाहर निकल—



अद्विग मैं सफल  
हुआ ! अले... ये  
पीछे से आकरों  
केमी ?

कुर्ती से उधरता नागराज और बचा ली उपर से आती जान -

उफ़!

स्पर्श स्पर्श स्पर्श स्पर्श स्पर्श

घातक लेजर किरणें

उपरो ही खंडले से बहुत दूर निकल आया -

मौल से वह रोसांचक लहराई मुझे हलकेत पाद रहेगी!

नागराज की लहरायात से किसी कुडाल गट की भीरी स्वयं की लेजर किरणों से बचता नागराज







# बड़ा तातामस

मेदिना में हुआ यह घटनाका यह स्थिति करता है कि अपनी असफलताओं को देखकर मिलकिलन पाताल ही हो गई है।



बार हीक वही थी-

यह निकलने मेरे और के जल से। यह निकलने जागरण, लेकिन वह बचकर कहां जाएगा, मैं उसे धुंधली नहीं।

अब जागरण को स्वतंत्र करने के लिए मैं अपनी नई शक्ति का प्रयोग करूंगी...



लेकिन उसके लिए जागरण को नई शक्ति का प्रयोग कर सकूँ।

क्या थी मिलकिलन की नई शक्ति ?



जागरण-

यहों से सीधा मजली के घर पहुंचकर उसने मिलकिलन से पता चल हीरा कि अचिर वह मुझे मिलकिलन के जल में फेंकने के लिए क्यों ले गई ? क्या सब वही थी उसकी ?



मजली के घर पहुंचा जागरण-

सब घट स्थली है, जो तो मजली नजर आ रही है और ना ही उसके परिवार का कोई सदस्य। कहां है सब ?

मेरे पास!



... मैंने उन सबको कैद कर रखा है।

बिल्कुल ठीक कहा तुमने नागराज, जब मैं तुम्हें स्वतंत्र करने के लिए पावलों की अंतिम लगे बंधुई में बंधु राही थी तो तुम मुझे सगावी के घर में बजर अक थे।

ठीक है सगावी, मैं काल तक बंध पित तुमसे मिलुंगा।

नागराज किस किराक में है।

जिस किराक ! ओह, सगाव ! मुँकि तुमसे सगावी के परिवार को अपने पास कैद कर रक है, इतलिन वहु तुमहाला सपथ देणे को तेघा हूई।



अपने सगावों का जकाब घने के जिस मैंने तुम ही सगावी और अपने परिवार जलों को धर बंधेरा-



नागराज तुमने कस कयों अक धर और वहु तुमसे कस बाहल है ? मुझे सब बल धोकरि, कडल इन्के, इरीर पिपडुई में बंटे सजर आंवे।



अपने परिवार के सपदों की सगावती की सजतिर...



... सगावी ने मुझे सब बलया - ओह ! ले नागराज किसी कस सजतिर की खोज में है... रुठ, ससग ले नागराज की खोज पूरी हो गई।

ससगब !

ससगब वहु कि नागराज जिस सजतिर को बंधल कि रहा है वहु सपदल की पहाडियों में स्थित है। तुम काल उते वहां लेकर पहुंचोगी।

लेकिन मेरी जलकरी में ले सपदल के पहाडुई क्षेत्र में कोई संधिर...

... अहीं है लेकिन अब धिच अससग !

कुछ न सगावी ! वहु बेघारी-

... और समाजवादी भी कैसे उन्हें पे कहां मरतुन था कि मिस किलर को आसपास काक की संरक्ष करने में किलरन मजदूर अलग है-



इन्होंने मजदूर और अपने अलखे आधुनिक सभानों की मदद से एक दिन में स्वपहास की पहाड़ियों में तुम्हारे सपनों का संविर खड़ा हो गया-

जिसमें मैंने तुम्हें मेल देने के हर सभान को स्वयं अपनी देस देस में फिट कराया । लेकिन तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि तुम बच निकले ।



मेरी किस्मत को दाद देने के साथ-साथ तू अपनी किस्मत को कोस मिस किलर...

... क्योंकि मैं तुम्हें अपने सर्प होशियों से कैद करने आ रहा हूँ ।



मजदूरन के हाथ से निकलूँ सर्प निकलकर मिसकिलर की तरफ लहराया-

...अब अपने असल पूरे कला और मजदूरन तुम्हारे परिवार बलों को बचाना जल्द है तो...



...सब अचानक पहुंच । हो हा हा !

नागराज का अंत

मद आइलैंड! मैं जानता हूँ वहां किस किलर ने मेरे लिए मौत का एक सजा जाल बिछा रखा होगा। लेकिन मेरा बहुत पहुंचना बहुत जरूरी है, क्योंकि मालवी और उसके पीछे वाले लोगों की जान स्वतंत्र में पहुंच गई है। अगर उन्हें कुछ हो गया तो मैं अपने आपको कभी तक नहीं का पाऊंगा।

नागराज नुरत है, मद आइलैंड की एक रजाम हुअ-



उन दो घूरती आंखों से बेवकूफ जो आइलैंड-लिक उसे ही देख रही थीं-



मद आइलैंड-



लक्ष्मण और पशुपति का वार्ता—



जहाँ तक इसका से चिरा  
वह छोटा सा टापू ही सब अड्डलैड  
कहलाता है, जहाँ उस रोपके  
द्वारा से ही पहुँचा जा सकता  
है।



आ जा लक्ष्मण, आ जा । तेरी औसत  
तुम्हे यहाँ स्वीच ला रही है।



लक्ष्मण की अंतिम मुस्काली  
मिस किलर की अंशुनिका  
सामने स्थित हैस जहाँ पर  
बूट कर उठी—

इधर सब अड्डलैड की जमीन पर पहुँचे  
लक्ष्मण के पाँव—



यहाँ मुझे ना भिरे  
सावरी को दृक्क है बलिके  
मिस किलर की भीदिसाल  
है और प्रचलन करना है  
कि किलर, लक्ष्मण  
सालाकों के सिधे पहुँचाने  
में सफल हो  
सकें।

आंखें आश्चर्य से फट गयीं उसकी सजने के उस दृश्य को देखकर जो आठवें अध्याय से भी बड़ा अचूक था -

ये पीछे क्या है?

अपने पीछे अकाल मुलकस वाला नागराज -

हड़कड़कड़



ओह! दालदल के नीचे से निकले ये भयानक जलवा। जिसके शरीरों से घातक आधुनिक राशे बंधी हुई हैं।

हड़कड़कड़



...जिल में निकली  
किरणों का बिजली  
है।



उफ़! इस बार सिल किलर ने मुझे  
जहननुम रलीव करने का काकी  
अपमानक तरीका अपनाया है, लेकिन  
मेरे प्राणी सिल किलर के पास आना  
कहाँ से? इन्होंने तोलेपन हमलाओं  
बर्फ भीत गए हैं।

इससे मुकाबला किस वजह अब मेरा गुजरा नहीं,  
लेकिन एकलौटा हाथ इससे कैसे मुकाबला होना इसके  
लिए मुझे कोई हथियार तो चाहिए ही, और इन  
प्राणियों के डारिन से बंधे  
हथियारों से अच्छा  
हथियार कैसे  
सा हो सकता  
है।



लेकिन उसे हथियारों के  
लिए मुझे अपनी उलक पर  
स्वेलता होगी।



सावधानी की सहायता से  
उपलब्ध एक प्राणी के पंजों  
से विषम बाधा समाप्त...।

... और कुछ पलों बाद ही उसकी  
पीठ पर आ पहुंचा—



अब—



राज, हाथ में आते ही नागराज ने उसका इस्तेमाल करने में एक पल भी नहीं संकटा—



बुरा पल नागराज के लिए बहुत अउपयुक्त साबित था—

नागराज की मोर्छों ओ उस तेज प्रहार ने अंश किया—



धड़ाम से मिर के बल हीरो अ मिरा नागराज—

ओह! वह प्राणी तो तेजी से कीचड़ में बदलता जा रहा है, इसका मतलब मैं जिनहों लारवों उर्ब के जीवित प्राणी समझ रहा हूँ वह कीचड़ के बने हुए हैं, तो किज मिसर किराज से दुजका निर्माण कैसे किय होस ?

अभी संभल भी नहीं पाया था कि उस पर एक और मुसीबत आ दूटी—

दलदल से निकले उस विचित्र से प्राणी की भुजाएं नागराज के शरीर से आ लिपटीं—

इन भुजाओं का मेरे शरीर पर कलस चरि- चरि बढ़ रहा है। मुझे इनसे स्वयं को तुरंत अजाद करास होस !





नारायण ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी लेकिन—



आहूह! मैं इस प्राणी की पकड़ में नहीं छूट पा रहा हूँ।

धीरे-धीरे उस प्राणी की भुजाओं के कसब के बढ़ने के साथ ही—

—अब वह चमत्कार न हुआ होता—



जैसे कहीं से आकर असा का बहुभुजाय उस विचित्र प्राणी से टकराया—

तो—  
ओह! ये भी कीचड़ में बदल गया।

लेकिन इसे कीचड़ में बदलने वाली असा फैकी किसने? असा-पान जोई दिख तो नहीं रहा।

कौन है मेरा सवदगा?



नारायण का शरीर विचित्र पदार्थ न रहा था—

अंधेरे में बुझती नारायण की आँखों के प्रकाशों साथ रही थी दर्दनाक श्वेत—



और वह श्वेत उसके हर हाल में मिलनी ही थी...

मैं! तुम्हारा मित्र! तुलसिजिबल श्वेत!



अवृद्ध मजबूत यहाँ प्रोफेशन भीकौर बर्सा :-

लेकिन तुम अचानक यहाँ मेरी मजबूत को कैसे आ पहुँचे, तुम तो अलमें थे?





अच्छे-बुरे वालों की वजह से मुझे जल्द ही रिहा कर दिया गया। जेल से बाहर आते ही मुझे पता चला कि तुम इस समय बंबई में ही हो, वरना तुमने मिलने निकल पड़ा। लेकिन जिस समय मैंने तुम्हें देखा, उस समय तुम बहुत जल्दी में थे, मैं सलाह देना चाहता था, लेकिन तुम्हें पीछे पीछे यहां तक चलना पड़ा।



और साथ ही ले आऊ तुम्हारे बुद्धिजीवी को सबक सिखावने के लिए अपनी यह विशेषता!



लेकिन ये सब संभव क्या है?

सब बलकेश दोस्त, लेकिन पहले इनमें पूरी तरह सत्यापन कर लें।



नागराज भी पीछे न रहता...

अब कुछ देर उड़ता छेड़कर...



... अपने साथी से अलग रहने मिले!

**भड़क**

जवाहर और अद्भुत शक्ति का प्रयास तेजी से  
रंगना रहा था-

अच्छा! ऐसे ही लगे हुए  
बोले, इनकी संख्या तेजी  
से घटती जा रही है।



लेना नहीं होगा,  
क्योंकि जो दुस घटती संख्या  
को जितनी तेजी से घाटू बढ़ा  
सकती है...



... और इसके लिए मुझे  
निके अपनी उंगलियों  
को पीढ़ी की तकलीफ देने  
की जरूरत है।

उधर कर्तु  
स्थिति देखो...

... और दुधर-

ओह! ये क्या?  
दुस वल से लो और बहुत  
से अंधकार शाली निकल  
कर बाहर आ रहे हैं!

ओह!



अगर ये दुर्गा-तरु जि काले रहे तो  
इन्हें स्वाम करने की अराधना  
सुव ही स्वाम हो-जतेसे।

हां, ऐसा ही होना, लेकिन अगर तुम इनके  
शिकारसे के प्रयोग को बंदकर-उसे स्वाम कर देंगे...



तुम्हारा सोचना सकारण ठीक है-जगराज,  
ये दुन प्रणियों के शिकारसे के प्रयोग को  
बंदकरने में तुम्हने का प्रयास करता हूँ...

... तुम मेरी बात की  
सहायता में इन्हें समाप्त  
करना ज़री रखो।



अगर की सहायता में जगराज उन प्रणियों को स्वाम करने में सफल हो...

और अबुदुद अराज उनके प्रोपेस को-कामना बर्न...



दलदल का वह  
स्वाम-तुम अंधकार प्रणियों  
के शिकारसे का प्रयोग है।  
लेकिन उसमें क्या सुख  
हिय है यह जानने के लिए  
तुम्हें अपनी-आप पर भरोसा  
होना!



अपने कपड़े मुझे उतारने होंगे। धर्म से मेरे हाथ-पैर उतारने में सफल हो सकते हैं।

तुम्हारे ही हाथ—

मैंक लंबी सांस लेकर कूदा प्रोफेसर श्रीकान्त बर्मा—

**इशक!**...



प्रोफेसर श्रीकान्त बर्मा ने अपने कपड़े उतारे —

बलबल में राहने तक धंसना पल गया—

ओह! बलबल के अंदर तो कुछ मजबूत नहीं आ रहा है। सिर्फ धुकर ही मरदान किंच ज सकला... ओ... मेरे हाथों से कुछ टकरा रहा है...

... सोटा पाटुप लकाल है। और... और... और... इसमें तो एक टुकड़ा लकाल कम से कम पांच फुट लंबा है। पर क्यों? मुझे इसकी पूरी लकाल लंगकर सोलना होगा।



बचकत सोलकर पाटुप के अंदर प्रवेश कर गया अतुल्य मजबूत और फिर दाकाज अपने आप बंध ही गया —

बाह! बलबल के अंदर सोटा पाटुप! और इसके अंदर सांस लेने योग्य टुकड़ा यह जकर किसी औरियल वैज्ञानिक का काम है।

और वह औरियल वैज्ञानिक ही लकाल का मुद्दमन है।



मिस क्लियर बुरी  
तारू लौठी -

ओह ! स्माराज का वह सबदर्शन चक्रवर्त के रूप में हेडक्वार्टर में प्रवेश करने की कोशिश कर रहा है। उसके स्माराज की तैयारी करनी होगी वह बचकर नहीं जा सकेगा।



प्रोफेसर श्रीकांत एक अंतरिक्ष ही वृत्तिका में जा पहुंचा था -

दुलदुल के बीच बड़ी चपट अंतरिक्ष भी स्थिति बनती है कि इसे डिगने भी बसना है, वह इन्क्यूबेटर के इलैक्ट्रिक विस्फोट का स्फोटो इलैक्ट्रिकल यह है कौन ?



यह अंतरिक्ष का तुम्हें सोना नहीं मिलेगा...

अधोकि तुम्हारे पक्ष में लड़का बनकर जमीन पर चढ़े दोसे।



ओह ! अंतरिक्ष... यकी तुम्हें मैंने अंतरिक्ष की खबर हो गई है। अब तुम्हारे बचने के लिए मुझे...

अवृद्ध होना पड़ेगा।

तेरी से अपने डायरी से पहचिप्य अंतरिक्ष चला रहा प्रोफेसर श्रीकांत -

और ही मर -

अवृद्ध्य!

अभी- अभी तुम्हारे सामने था- अवृद्धी देखने ही देखते अवृद्ध हो गए।



यह चपट जड़ है या कुछ और ?

ये साकलने के लिए तुम्हें अपने दिमकों को काट देने की जरूरत नहीं है।

**ध्वाङ्**



कौतूहल था हममें—

वह उधा है मून डालो उसे!



... लेकिन वह अचूक समय वहाँ कहीं था—

वह तो यहाँ था—

**ध्वाङ्**

उस बिना मैं लेखकों की बखाल ही का ही बखमेंगे ले...

**तडाक**



आज सिर्फ़ सोची तरह से ही नहीं आंटी तरह से ही छालक सिद्ध होनी है!

**धाङ्**

**ध्वाङ्**



मिस किलर औरों का दे भौचक की अपने हाथियों की होती दुर्बल को बचा रही थी—

हैडक्वार्टर में फुल शक्ति बड़े ही स्वरूपमयी तरीके से आवृत्त होकर मेरे हाथियों पर दूर पड़ा। ऐसी अत्याचारी शक्ति जगने को मेरे मिस किलर का गुलाम होना चाहिए।

एक अटके से अपनी चेहर से उठ खड़ी हुई मिस किलर—

तुरंत ही मिस किलर पहुंची उस बड़े हॉल में—

अपने आपको मेरे हाथों का दो मित्र दुर्बल शक्ति। तुरंत ही अत्याचारी मिस किलर के गुलाम बन कर तुम बहुत खुशी रहोगे।

मिस किलर, तुम जैसी अत्याचारी का गुलाम बनने से अच्छा मैं मर जाना।

... मेरे जो एक उतर समझे वाली मस्जिद पर हाथी तो इसके उपरों पर मुद्रकाल खेल गई—

जी जग से जुटा हुआ है नागराज ! लेकिन मुझे उसी व नहीं कि वह अपने प्रकाश में प्रकाश हो अत्यंत क्योंकि इसकी उम्र भी कुछ उसकी अचारी का कारण बन जायगी।

लेकिन मिस किलर मेरे मिस सम्पन्न नागराज नहीं वह आवृत्त मानव है जिसे मुझे अपने वक्र में करना है।

आवृत्त मानव का बोलना करने क्योंकि—

अरे ! ये मुझसे टेप से कैसी आ धिपकी ?

कुछ सम्पन्न जाने से पहले ही धिपधिपी तभी उसके लगे इतना से धिपट गई—

उफ़!



मिस किलर ने एक भयंकर अट्टहास लगाया-

हा हा हा! अस्मिन् तुम्हारे शत्रुवृत्त आज मैं केस राधा। मैं पहले से ही यह ध्यान बहाकर आई थी कि जैसे ही तुम कोलका, मेरा सेप्टेक अकाउंट की विद्या में आधुनिक विचारधारा टेप करने के लिए तुम्हें थिक्का लेना जिसने एक बार नगराज जैसे शत्रुको भी बेवश कर डाला था।

और हा, इस टेप राधा से घुटने का सहाय्य अपने विद्या से निकाल देना।



... क्योंकि जब तक मण्डी नाम रहे इस पर नहीं बुलका तब तक तुम इससे किसी भी शास में नहीं घुट सकते और उस स्त्री की मदद से मैं तुम्हें तब तक इस टेप मण्डी से नहीं घुटूँगा कहीं जब तक तुम्हें अपना मुलका नहीं बना लेती!



लेकिन तुम्हारा मण्डी बंधक करने से पहले मैं तुम्हें उस मण्डी का अनाथ दे देना चाहती हूँ जिसकी ललाटा में तुम अपनी आज पर शेषकर यहाँ तक आ पहुँचे ...

... तुम यही सोच रहे थे कि लायनें वर्ष पहले के इस वलकल से जीवित होकर कैसे निकल रहे हैं इसका मस-अजब यह है कि मैं अपने मेहनत से एक सेली-लडक को बचाने में सफल हो गई थी किनी और प्राणी के लुका को एकत्रित क



... उतने बेसा ही कृत्रिम रूप देना है जैसे उसका स्वरूप था। वृत्ति लायनें वर्ष पुरानी इस वलकल में प्राचीन प्रणियों के कला काकी अधिका सजा में सेव्य है इसलिय लडक मण्डी की मदद में सेव्य अजोको-सरीष सामाजिक प्रक्रियाओं से क्रिया करके उन प्राचीन प्रणियों को स्वरूप दे रही है।



अपनी इस अद्भुत लडक मण्डी की ब्यौलत में सारी कृत्रिय पर राज करेगी और तुम में मुलका बन कर मुझे भयान सहयोग दोगे।

तुम्हारा सोच शत्रुवृत्त ही आज मिस किलर ...





... अगर तुम्हारी लड़ाकू मशीन से जिन्हा दूध प्रणोत प्राली मुझे मार डालने में सफल हो जते ।

अपने अद्भुत शक्ति जगत की सहायता से जिसे मैंने चुपके से अचूक रूप से लपके पीछे छुपा लिया था कि अगर उस पर कोई सुनिश्चित आप तो वह तुम्हें नुस्त राबत को...

... और अपने इस काम को जवाब दे बसुकी अंजना दिया। जैसे ही अचूक रूप से संकट में कैसा जवाबदाय यहां से निकलकर मैंने पता ज पहुंचा और मुझे वलवल में स्थित पाइप वाले हॉल में लेकर चली आ गया।

नागराज तुम !  
... तुम यहां कैसे आ पहुंचे ?

अरे ! मेरा ध्यान कुछ पलों के लिए कंट्रोल रूम में हुआ और तुम उसका कायदा उठाकर यहां आ पहुंचे ।

लेकिन यहां तुम्हारी एक बहू-जाले वाली जगहाज। जैसे अपने जलकारी सेक्टर की वह फौज एक बग विस्तारण करती है, जो एक बार तुम्हारी वजह से खत्म हुई थी। इस बग तुम उसने वहीं बच गईंसे ।

खतरा में ही सेक्टर की फौज ने जगहाज को घेर लिया -

तेरी मौत के साथ साथ मैं वा केवल जगहाज की हत्या के नाम से जाली जाली बन्कि जगहाज के विद्वान सिद्धिजी खजारे की स्वामिती भी बस जहूंजी हा हा हा ।



नागराज ! और है ये जगहाज ?

सोच में हूँ जगहाज की...

असले ही पल उधल जल पड़ा—

जे भी सोचना है उसे अब मैं सोचूँगा।  
पहले सोचोनों की हल कौन से निपटने की  
सोचो जिनमें से एक का भी आ सफल हो सके तो  
मैं सोचो निपट. अकेल कि साकर ही भूदूँगा।



विशाली का जीकी के सेटी बल हरो  
की बहौगत में हलसे बच सल था  
लेकिर हल आ बल करे हुनके  
सलसे अपने सर्वनेसिकों की बहुर  
सिकारण, से वेचकुषी होकी लयोकि से  
सगी हुनके तुलन ही विपका देरो।

ले किर बल  
करे हुनसे जैसे  
निपट ?

सोच ही सिच अजाल ने सोचोदलो से निपटने का लीका—



हुनकी सोच अचिने हुनहीं के  
विरुद हुनसे बल करे तो बल  
बन सकत है।  
लेकिर हुनके निर सुरु  
आपथिक कुती...

... और उपसताकी  
अकत है ...



... और अकत है सही समय  
या सही आ करणे की।





सुपर गैंग की मदद से  
एक-दूसरे से घिरेके पे दोलने  
गोंदोदिस ले अथ जीवत भए  
नहीं धुटने वाले!

इसलिए अथ मुझे  
अपना माता ५,००० रुपए  
एक के करने वाले इन दोलने  
पर लकाले अदिस।



इन दोलने की टेप हस्ती भी अथ इनरी  
के डारौर से लिपटे ले बात बने। लेकिन  
इसके किरम मेरी तरफ बढ़ती टेप हस्ती  
का उनकी तरफ बढ़ता अस्की  
है— और ये काम मेरा धनु  
उदुन सर्प बसपुत्री अंगनम देवा

नागराज के डारौर से निकले उस उदुने वाले सर्प

ये टेप हस्ती ओ हका में ही अपने  
मुँह में दबाओ—



और—  
इसकारा, मैं  
अंगनम  
सिंघाही!



पलाभ में ही चिपचिपी टेप का बड़ा डेर बने  
नजर आप दीनें हो दोदिस—



उसी क्षण राजराज को सतर्क किएर  
अचूकत समय की आवाज से-

राजराज !  
उधर देखो !

ओह ! इतने सने गैंगोएन...  
अब ये चढ़ो आ चढ़ो ले फिर  
हमें कोई भी एक चिपचिपी भी  
अपने से नहीं बचा सकता !

उल्ले सेकना  
होगा !

एक साथ सैकड़ों हथों को अपने हाथों में निकालना क्या राधा राजराज--



अब-

बहु सौका पाकर  
यहां से भाग गई है !

उसका यहां से भागकर आज किसी  
अपने की तरफ इतरा कर रहा है. बहु  
अब कुछ ना कुछ अचलक  
करने की हान भेरी है !



मैं उसे सेकना हूँ, साथ ही  
तुम्हें इस घातक टैप से  
पुचुवाने के लिए भेरी हान  
सबे भी उससे इतना  
करना हूँ !

उम्मीद है ये सर्व दुराज  
गैंगोएन को इतनी देर  
तो सेकने में सफल हो ही जाएगा,  
जितनी देर में सिस किलर का दिमाग  
ठिकाने में आये !

सिस किलर  
कहां गई ?



नागराज का अंत

उड़ते-उड़ते नागराज सिंहा की ओर आया  
नागराज को डोल झूल में पड़ चुका—

सिंहा कितना तेरे  
घातों का ही भजन नहीं  
आ रही ! कहाँ गई  
वह ?



मैं यहीं  
सौंदर्य हूँ नागराज !

और मेरे साथ सौंदर्य है... तेरी  
मौत ! तुझे दलदल के गहरे घातों  
पर आकर अपनी मौत का सफ़र  
रुतुव घुल सिखा है...

... दलदल में से राजकर  
घातों पर आते लगते, तेरे झरिरे के  
कुंध कण भी दलदल में मिल  
सक थे...

... और उन कणों को लगेदका,  
मेरी अदृश (अदृश-मर्दान) ने  
बला दी है तेरी मौत !



ओह ! दलदल के  
कीचड़ से बल मेरा ही  
प्रतिबन्ध !

**धाड़**

जगसाज ने पहला कदम, रघुब कोरने का फैसला कर लिया था -

यह मेरा प्रतिरूप काफ़ी खतरनाक लग रहा है ! इससे पहले कि यह मुझे धर बुझा लगे, मैं इसको काटूँ ...

**आह !**

जगसाज को रोना लगा, जैसे उसने अपना पैर, चट्टान पर दे मारा हो -

और प्रतिरूप के बग़ से उसके विमान का पुर्ज-पुर्ज क्षितिज पर विघ्न -

**आसस ह !**

**धाड़**

हा हा हा ! यह तो मैं तुमको बताना भूल ही गईं जगसाज, कि इसका शरीर चट्टान सा लगता है ! और इसमें अस्मिता भी तुम्हारे जैसी ही है ...

... चर्क निरंक इतना है कि तुम्हारे हाथ से असली लर्च निकलते हैं, और इसके हाथों से ...

... की चट्ट के साथ ! इसका मुठक पर कण आग होगा, यह मुझे वहीं पता ! मुझे इतना बचना होगा !

नागराज ने, जारों का उखाड़ना तो  
ले दिया, लेकिन—

ओह! मेरी सर्प शक्ति को इन  
विषों के संपर्क से बेचस कर दिया  
है। अब ले सिर्फ मर ही  
सकता है...



... कि मैं इनको विष  
फंकार से बेहोश कर दूँ।

लेकिन नागराज की विष-  
फंकार ने प्रतिक्रम को  
शुक्रासन पहुंचाने की  
बजाय...

नागराज का शक्तिशाली कुंभ पारों के लिए प्रयोग-शून्य हो गया,  
और उसकी गर्दन तक डिकेजे में कम गर्ज—



... प्रतिक्रम को उसकी मरक और डालने का प्रयास की—

ओह! इसके शंभू से ले विष-फंकार के  
प्रभाव पर जोड़ूँ हीन निकल रही है। जो  
मुझ पर बेहोशी का ल-असर कर  
रही है!





जवाहराज ने अपनी क्षमिष्क पर धारी वे होड़ी की अलककर,  
अपनी पूरी लकत नुदाई और—

लेकिन प्रतिक्रिया न केवल फुली से उठ सका हुआ, बल्कि  
उसने जवाहराज की एक हातक अकड़ में कैद कर लिया—

**धड़ाम**



आह!

इसका लबाफदा मेरे शरीर की  
सारी क्षमिष्क खींच रहा है!

मेरी लकत फतरना... अहह!

और कब मिल किलर के  
ठहाके से बूंड उठा-

हा हा हा! खत्म  
हुआ जवाहराज का  
खेल हमेशा के लिए!  
हा हा हा!



अब मिल किलर,  
'जवाहराज किलर' बन  
गई है!

अब जवाहराज का  
खजना भी खोना होगा,  
और अंडरवर्ल्ड का  
साहाय्य भी!  
हा हा हा!

धीरे-धीरे जवाहराज के शरीर से विकसित होती अंधांध  
भी बंद हो गई, उसका शरीर झटपट हो गया—

येसा है तो मेरी किक भी तुम ले ले, मिस किलर!

**तडाक**

**आऊ!** नागराज, तुम जिन्दा हो! पर ये हुआ कैसे? नागराज ने तुम्हारी इच्छित मोहकरी बना कैसे कर दी?

नींदी मिस किलर! मैं तुम्हें पढ़ नहीं बना सकता क्योंकि मुझे खुद नहीं मारना कि ऐसा कैसे हुआ?

किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं है मिस किलर! ...

अगर एक अब मेरी तरफ देख लोगी तो खुद-ब-खुद समाप्त हो जायेगी!

**धाड़**

अबुड सलार, तुम लड़क सही पर! ओह प्रतिक्रमाओ तुमने खिच दवाकर विकिकर कर दिया।

लेकिन हुन हसन में तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?



अपनी दुष्क इच्छित के धन पर, जो सब प्रयास हो उठी अब मेरे कामों में तुम्हारी दर्दनाक पीरवें परी-

उफ! नागराज की आज खलने में है। मेरे में मैं ही उसे बच सकता हूँ... लेकिन मैं ऐसा करूँगा कैसे, मेरे इराफ पर तो टेपस्की बुरी तरह चिपकी हुई है!

मेरी मिस बहुत बड़ी समस्या थी-

... लेकिन मैंने उसका हृदय बंद ही किया -

यह टेप रस्सी मुझे चलने से रोक सकती है, अगर लवुकने से नहीं।

जैसी ये लवुकने हुआ मैं कंपोनेट्स में पहुंचा -



लेकिन अगर सगराज को बचाना है तो मुझे इस असंभव को संभव कर दिखाना होगा।



आगराज को उस प्रतिक्रिया ने बुरी तरह जकड़ रखा है, और मैं जानता हूँ कि उसे कैसे बचाना, जो प्रकृत है उसके लिए मुझे उस लवुकने सही है, तक पहुंचना होगा, इस हल में केवल यह मौजूद, उस सही है, यह चला लायकता अस्पष्ट है।

... लवुकने सही के ऊपर ल टिकाए

इस कलबाजी से मेरे मुझे हुए थे, लवुकने सही के ऊपर आ विरि -

पीठ के पीछे चिपके हुए हाथों का पुरजोर धक्का और मुझे पैरों के बिचाव से मेरे हाथों को स्पेल घुसाकर ...



और यहाँ पहुँचने के बाद  
लाभ उभर निकले थे। उस स्थिति  
का देना जो प्रतिरूप को  
निष्क्रिय करता था।

तुमने अपने प्रयास से  
नागराज को ले बंध लिया।  
लेकिन तुम होलें मुझसे बचो  
नहीं मैं तुम्हें स्वतंत्र काके  
ही बंध लूँगी।

... क्योंकि मैंने नेत्री मशीन से  
निर्मित प्रतिरूप को तेरे विकृत  
कानों के लिए यह MODERNAE  
का स्थिति बंध बिच है।



अब हमारी नहीं,  
अपनी चिंता कर लिये  
किलार...



क्या  
TT  
TT  
TT

वृत्तो ही पल- किलारिल की चीखें सुंजने लगीं-

उसके बेहोश होने के साथ ही झल्ल बुई-

किलारिल के स्थिति इतनी ही  
का करी है। अब इस प्रयोग के साथ-साथ  
उत्पन्न लक्ष्य सहीत भी लक्ष्य हो  
अली-अद्विष्ट।



अहं!



ठीक कहते हो माराज !  
लेकिन ये शक्ति कास तुम  
अपने हाथों से ही प्राप्त  
करो !

पर पहले  
मुझे सीधे  
अपन लो !



माराज की शक्ति का अद्भुत सम्बन्ध था,  
उस लाइफ सर्टीज को लेदना -



धरलो, अब अपना  
काम स्वतः हुआ !

अभी नहीं दोस्त, अभी  
तो हमको माराज की और  
उसके परिकर वालों को बुद्ध  
कर उन्हें आज्ञा करना है और  
फिर मिल बिल्ला को उला  
चढ़ाना है !

लेकिन पहले  
इस सचने जरूरी सज  
कारण...



... तुम्हें इस सटी शक्त  
पदों की सहायता से टेपरस्नी  
से आज्ञा करवाता !



टेपरस्नी भूदले के साथ ही अद्भुत शक्ति  
ब्रह्म प्रोकेसिंग शीकॉल -

मैं तुम्हारे इस सहायता को  
जीवन भर नहीं भूलूंगा दोस्त !

कोई बात नहीं माराज !  
मुझे तो तुम्हारी सहायता  
करके मुझी ही दुर्द  
है !



फिर माराज ने शक्त की और उसके परिकर वालों को आज्ञा करवाया-

मुझे शक्ति करवा माराज,  
मेरी बजह से तुम...

मुझे तुमसे कोई  
सिखाया नहीं है माराज,  
तुम्हारी आज्ञा मैं ही होता  
तो वेला ही करता !

आज तो अब आज्ञा  
चलें, क्योंकि अभी  
मेरी सहायता पूरी नहीं हुई  
है और मेरी सलाह  
तुम्हारी सहायता के बिना  
पूरी हो ही नहीं सकती !

फिर सभी दुर्ग-लुडी वहां से खाना हुए-



उपर किन्ने के अन्दर धार सफाई से सज्जते को लक्ष्य बना  
की शंभौर आकाश में भंडा किया—

दोस्तों... पहले अदुला  
झाकूरा और अब जिस किलर दोनों  
मि के राजन सजाऊ को खरने में  
अनकाल रहे, बल्कि अपने-अपने  
अनकाल जीवन को भी अंधकार में  
धकेल बैठे।

अपना अदुला झाकूरा को उसके  
राज वाले बंदी बकाकर अपने साथ ले  
कर वहीं जिस किलर भारत की किसी  
अनकाल सुरक्षित जेल की ओर  
बढ़ाएगी।

और इस दो महारथियों की  
दर ले गेरे अनाकाल को अभी देस  
पहुंचाने के साथ-साथ यह बात भी  
गेरे विमान में बिगड़ी है कि जमानत  
को कोई भी नहीं समझा कर  
सकता!



सक अनाकाल से उठ खड़ा हुआ प्रेमेस  
समझति सजा—

इस बात को अपने विमान से  
निकाल ही जिन अनाकाल साथ उड़ान  
में अनाकाल का निर्माता है। और मैं  
अने बुद्धियों में उतर कर सकता  
है, अब मुझे सोका ही जिन!

किर तो सजी खड़े ही गले—

सही, मैं कहेगा  
इस दुःख काम की!

अगर जमानत ला कर सका  
इस छोटे से काम को तो अना  
दुश्मि में और अनेक अनकाल  
के लगे को!

मुझे विमान उड़ान  
दे सका!

वहीं  
मुझे!



दिल्ली किलर के, किरी जिनके की  
अने सुरक्षित कर अने अनाकाल—

... लक उड़ान  
धुमका!

तेजी से घूम उड़ी लक  
दील की मुझे—



किर वहीं पहले  
दाल विमान...  
जिसका धारणा  
उपरी नहीं के से  
होना...



जिस तरीके के रखने तकरी बंद था -



सांघि बंद -

नगराज-

मैं अराजगी दूध छोड़कर मद्रा के लिए आधुनिक दुनिया में रहने के लिए आ गया हूँ, लेकिन इस दुनिया में अंतर मैं नगराज के रूप में रहा तो मेरे बुद्धिमत्ता अपना ही मुक पर हमला करने से बाज नहीं आयेगी!



और अपने उस रूप के लिए मुझे अपनी सौभाग्य छोड़कर इच्छा पूरी शक्ति का महारा लेना होगा!

नगराज!

नगराज की सोचों को वहाँ पहुँची सनकी ने भेजा किया-

सनकी ने विद्या लेकर निकल पड़ा नगराज-

यहाँ से आग से आग सजुगहो पहुँचने के लिए मुझे विमान एकड़ना है, और उसके लिए मुझे पहुँचना है बंबई के सहार इंटरनेशनल एयरपोर्ट!



और ऐसा होने पर मेरे दुर्दु-विश्व रहने वाले लोगों पर कभी भी कोई भी संकट आ सकता है। भूँके मैं ऐसा नहीं चाहता इसलिए मुझे इस नगराज के रूप को त्यागकर किसी अन्य रूप में इस दुनिया में रहना होगा।



तुम्हें अपने सपनों के अंधिर को खोजने के लिए नए प्रयत्न में स्थित सजुगहो जाना होगा। नगराज मेरा आश्चर्य कहता है कि वहाँ सैजुद मैकडों प्राचीन अंधिरों में तुम्हें तुम्हारे सपनों का अंधिर उबर मिलेगा।

ठीक है सनकी, सपने के लिए आधुनिक। फिर कभी तुम्हारी उबरत पड़ी है। तुम्हारे उबर मिलेगा।



तभी एक आदमी से रुक बंदूक टैक्सी-

डिसका काण... डीक टैक्नी के मामले खुदा राज अण माराज को —



ये जोर है, और इसने क्यों हो की टैक्नी ?

ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य

अस बेडा, मना अण के बाद टैक्नी क्या अपने हाथ पाँव भी नहीं चला पाएगा ।

नागराज अभी सोचता ही रह गये...



... और सबसे वाले ने था भी कर दिया —

ये चलने के लिए इसके धारों से बचकर...

ध म



ओह ! संकटम से सत्यजक हो मण ये दुहाहू ! लेकिन क्यों ?

... और अपने का कणके बुने तुम क्यों का जखब देने के लिए मजबूर करना होगा !

ध ड



बल की तेजी से आसपास  
उड़ता रहूँ—

ओह! मेरे ऊपर से तो दुसरा पाया  
और चबू गया। इसका भिन्न दिक्कत  
लड़ाने के लिए, वह नीचे पड़ा। ओह  
का खंडन सकाइन डीक देना...



वेहद तेज दृश उभार ले...

... बुराहाहू को बुझा डीकना डालना, इतने टैकनी अपने  
दोनों हाथों में उठा लीं—

इसलिए इनने  
पकले कि वह टैकनी  
सुख पर केहे...



अरे! यह भारी भोजन  
टैकनी असा मेरे ऊपर गिरी तो  
मैं पिलकर रह जाऊँगा!



... सुखे उत पर इतना  
का देना जगिन!

अब तुझे संभलने का मौका देना बेवकूफी होगी।

... राक साधरी अपना विष उसके शरीर में भर दिया—



नागराज के हाथ से भूट पड़े सबों ने...

अपना काम कर सारी सभे अपना नागराज के निमित्त में समाप्त—

किर नागराज दुबरी टैकसी एकदुकर लॉन्गवेर्ड पहुंचा—

ये उपद्रव सभने के निमित्त ही सभे सभाने आया था!



जैसे वारा कुछ ही घंटों का सफर लघु कार के जलान संघट से पहुंचा...

सूकड़ों प्राचीन मंदिरों के निमित्त वर्षों से प्रतिक्रियामें सभकों का मंदिर सुकड़ लख चलीं कहीं मिलेला!



उस मुरुग संघिर की तरफ बढ़ते नगराज के कचूम आवाजक उस आवाज में विरुक्तकराव दिग—

ठहर जा, नगराज!

यहां कौन आ जाय मुझे दुस रूप में बदलावने काल!

मैं नगराज ! और ये नगराज मुझे सफल हूँवाकी होसी नगराज कि तुम्हको बदलावने काल ये नगराज कल दुस दुनिया मे लेगी बदलाव स्वतन्त्र करके ही नगराज !

ये तो दुष्प्रभाषी नगराज है, लेकिन दुसरो मेरी क्या दुइतकी है, और दुसको मेरे धरा होजेका पता कैसे ...



**तडाक**

... योला! आस है!

अभिषय प्रहाय किया था नगराज ने...

अब तो नगराज की शुक होला ही था—

तेरे बारे में बहुत सेसवाल मेरे अस्तिपक में पूराव रहे हैं नगराज, और मुझे उम्मीद है तू उनके उत्तरव बिल पिटे नहीं देवे काल !

नगराज के धर से उलट राव नगराज—

क्रोडित नगराज ने अद्वचर्जनक तरीके से एक अपनी बदलाव को अपने काल से उठा लिया—

नगराज, जग मोच के बतला कि ये अपनी अद्वठाल तेरा कीरा बलाभशी यक कचूमर निकालेगी!

ओह! ये मुझ पर घटारा निकले जा रहा है! मगर इसी पर भ्रम कर बचना होगा। और उसके लिए निकलने होंगे मगर... अरे!

... अंतर सोचना ही यह जाल तो फिर कुछ सोचने का एक माहुर बन जाता—

उफ़! बाल-बाल बच! मुझे अपनी ताकत-शक्तियों का फिर परीक्षण करके देखना होगा।



**कुड़कुड़कुड़**

ये क्या? दुसिलों फुट लंबी लम्बाइयों पर निकलने की बजाय मेरी शरीर से निकल सक ही क्या निकलता है। उफ़! क्या हो रहा है ये?

सोच में हुआ नागराज...

इस बार तो और भी खतरा हो गया—



फिर भी क्या नहीं निकलता... मगर शक्ति बिलकुल खत्म!

उफ़! क्या हुआ... क्या हुआ है... मेरी लम्बाइयों की? क्यों मेरी शरीर से बाहर नहीं निकल रही ले?

किसी और तरीके से इस मायाफल को बड़ा में काटना होगा! और वह काम करेगा मेरा यह आबरकोट!

नागराज ने बिजली की भी फुर्ती से मायाफल के धातक खन के, आबरकोट की लपेट में ले लिया—

**फुड़सा**



# धड़क

अब है मेरी भारी लक  
प्रचण्ड बर काबो की...



... और इसके संभलने से पहले मैं अपने हाँतों को  
इसके शंस में बांध दूँ लक। मेरे शरीर में बहुत  
जहर इसकी जलने में बहते जादू में मिल जाय,  
और फिर इसे मोक की तरह पिघला दूँ।



नाराज के विष को पका एक इंस धरती के  
प्रणियों में सेनी क्षमता कर्ता है—

मजबूरी में हुने मरना लेकिन ये धा जैस  
यद्दा, बनना ये मुझे मर और कहां से आया  
हुलाता। ध ?

उन सगलों का जवाब जो मुझा,  
नाराज की तो बुरी तरह  
चिढ़का वह—

पृथ्वी के घातक और अंधका  
इच्छाधरियों को दूँदकर मेरे गिलाफ  
सहा करने की कला तो सिर्फ अमर्त  
ही जानता था, उसी ने लक बर मुझे  
पर लेने हजले कराता थे।



लेकिन नहीं, ये अमर्त नहीं हो  
सकता। नाराज की तो मैं अमर्ती के  
ज्वालामुखी विफोट में फंसा धीवुका  
आ मक था और वह ज्वालामुखी मेरी आँसु  
के संभले हुए तरह फटा था कि अमर्त  
का बरना असंभव था। \*



फिर सोचो क्या अपनी अमर्तधरियों के बारे में—



तो फिर किसका गुलाफ  
बन कर उस इच्छाधरी  
लक ने मुझे पर हुलाक किया  
था ?

उस विषय में  
कुछ ज सोच सकता  
नाराज तो—



उसका जवाब तो मैं नहीं  
बुँध पाया लेकिन अपनी  
नाराजिले के क्षीण होने का  
जवाब अगर दूँद सकता हूँ।  
और उसके लिए मुझे योरा  
हाजिले में अपने शरीर के  
सबसे जलने की बाहर  
निकासता ...

यस ही के किले में फिर मैं गुँज उठे उस  
घंटे ने नाराज का ध्यान अंधका विष—

\* उपरोक्त के बारे में जानने के लिए अग्रज  
पढ़िए • फिर आया नाराज

अचानक संदिग्ध की तरफ बढ़ते नागराज ने अपना हाथ बढ़ा लिया-

हे भई! लड्डूक पर  
वेचकन जहाँ चलते हो,  
सरता है क्या?



एक भटके ने नागराज पीछे घूसा-

ओह... एसा ये  
क्या, हुन आपसी की  
अंतरे!



बाकी के शकव तुमके शले में अटककर रह गमा क्योंकि-



और अचानक वह संकेतला, नागराज उसकी कार लेकर उड़ानछू हो

चुका था-

वह इका में लहरा गया था-



नागराज और कार छोड़ ?

सजुराहो से मालीम किजोमीव वर स्थित यह नेडालन एटॉमिक पौवर स्टेशन । यह अत्यन्त गोपनीय बात थी कि इस पौवर स्टेशन में परमाणु बम का निर्माण किया जा रहा है -

यही कारण है कि यहां सैकड़ सुराई सुराज कर्मियों की निगाहों से बचकर कोई परियन्दा भी पौवर स्टेशन में पर नहीं सर सकता -



लेकिन ये क्या ? आज कौन पहुंचा है यहां ?

सुराज- हुलकी भी विश-फुंकर से इन्हें बेहोश करना ही काकी है !



सक-दो सुराजकर्मों शोलीयों चलाने में सफल हो ही गए, लेकिन -

फिर पल भर बाध ही शोलीयों चलाने वाले बेहोशी के अंशान में कचबुही मिलने लगे -



सुराज पर भला शोलीयों ने कहां असर किया है -

और इन्हें बेहोश करने कला नगराज अपने बू बाध -

कुछ ही पलों बाद नागराज स्टॉमिक पॉवर स्टेशन की मुख्य प्रयोगशाला में बजा आ रहा था—

इस सबको सम्मोहित करना होगा !



सम्मोहित सहाय नागराज के सम्मोहित का अर्थ जानूँ चला ले—



मैं कहां हूँ ?  
 मैं कैसा हूँ ?  
 वृद्धम समय मेरे आँसु का गुलम है !  
 बस, यहाँ क्या हो रहा है ?  
 सम्मोहित के जन्म में कोई वैज्ञानिक ने ओ-ओ नागराज की बालक—

सुनकर उत्तकी आँचें झौलान की भासिन्तु समक, उठती—

और फिर ओ होस उसे सारी बुझिण देवेगी ! हाहा हा !

परमाणु बम ! भारत का पहला परमाणु बम बनकर तैयार हो चुका है लेकिन अगर वो परमाणु बम बलास्त हो जाए तो भारत में ऐसी तबाही मचेगी कि बचक-बचक नागराज के नाम से धर्रा उठेगा और फिर...



सक पास बाद ही स्टॉमिक पॉवर स्टेशन में दूक उठे उननेउ लक्षण की अवगत ने जहाँ जैजु प्रयोगक उपकरण के सिंकेट वदु कर विम—

हैइइइइइ

इस लक्षण के बजने का एक ही मतलब है ओ परमाणु बम यहाँ तैयार हुआ है वह कठोर आ रहा है !



हे नागराज ! ये तो अलार्म हो जा रहा !



लेकिन कंट्रोलरौब में पहुँचा हर आत्म शक्ति उड़ होकर रह गया—

कंट्रोलरौब की तरफ भागो, वहाँ से लड़ू वैज्ञानिकों के साथ मिलकर हम उन बम को विध्वंस करने की कोशिश कर सकते हैं।



हा हा हा ! जैसे पलकभू बम से संबंधित कंट्रोल पैलन को सक्रिय कर दिया है अब बम को फटने और अपर में भीषण तबाही होने से कीर्तु नहीं रोक सकता, और ऐसा होने में सिर्फ कुछ ही मिलट-सेकंडों ! हा हा हा !



हटो मेरे सामने से, अब मेरा काम खत्म हुआ ! जलने दो मुझे ! हा हा हा !



सक सार्वु ने आकाश पर कर दिया बह का—



तुम लोगों की कल खतमे में डाल दी है, तु यहाँ से बचकर नहीं जा सकते !

सिं पर लगी उस घोट से आकाश काट उठा—

और फिर आकाश को संभलाने से पहले ही कीर्तु सुपरकॉमिंयों ने उने जकड़ लिया—

इसके मुँह पर कब्ज करो ताकि ये हमें अपनी विध- फुंकार से बेहोश न कर सके !



अरे ! ये क्या कर रहे हो तुम ? क्यों एकदु सज है तुमने मुझे ? क्या कुम्र है मेरा ? मैं तो सब लुगड़ो के मंदिरों के पत्त धा फिर ये मैं कहाँ आ गया हूँ ? मैं यहाँ कैसे पहुँचा ? और मुझे ऐसा क्यों लग रहा है जैसे मैं अभी- अभी जीव से जा रहा हूँ !



नागराज को अब अपना कुर्बान पता चल ले वह सन्न रह गया -

उफ़! नहीं! मैंने... मैंने यहाँ रावे पराबणु बम को मेरी स्थिति में ला दिया है कि वह कुछ ही देर बाद फटकर नागों की जिनगी को अंत के मुंह में धकेल दे; उफ़!

मैं ऐसा नहीं कर सकता!

तुमने ऐसा ही किया है नागराज! यह सैबुद प्रपंचक उपवास यह अन्त है।

ओह! उपवास है तो छोड़ो मुझे। मैं कोई ऐसा प्रबंध करने की कोशिश करता हूँ जिससे पराबणु बम को फटने से रोकना संभव हो सके!

तुम्हारी बातों में आकर तुमहें खोपुजे औसि बेवकूफ़ की आँसुआ नहीं करोगे नागराज, क्योंकि हम जानते हैं कि हमने धूलने के साथ ही तुम उस को फटने से रोकने का प्रयत्न करने वैज्ञानिकों पर हमला बोल दोगे।



ओह! इस तरह ये सार्ड मेरी जान बचाने की सजी नहीं, अब तो मुझे अपने को धुड़ाने का दुसरा तरीका अपनाएना पड़ेगा!

और वह तुमसा लीकाई है!

साफ़ करता दोगे, जो अभी भुग में का चुका है, उसे सुधपने का सोचा हाथिल बनने के लिए...



... यह करना उकरी ले सधा है!

**धड़**



शार्डों के होश विकाने लगाने के बाद-



अपने : तुम भी भागो, परमपुंज बस को फटने से रोकने के लिए हमने जो प्रयास किये थे वे सब कारके बंध लिये। अब कुछ नहीं हो सकता, इस ही हाल में फटेगा। दो मित्रद गण्ड तुम दो मित्रदों में भागकर अपनी आब बचा सकते हो तो बचओ।

सक मित्रद प्रोफेसर ! कंट्रोल पैसा के लिए अफ और कोरुं सेल साधल नहीं है जिससे परमपुंज बस को फटने से रोकना संभव है।

पलटते हुए अवासन, एक आवाते हुए वैज्ञानिक से टकरा गिरा-



क्या हुआ प्रोफेसर ! आप सब लोग चूँ भाग...



मैं तुमहें कुछ नहीं बताने का क्योंकि तुम ही होते कभी तबही के जिम्मेदार हो !

तुमका मतलब कोई तुमका हाल भी है ...



... और वह क्या है ये तुमहें मुझे बताया ही होगा प्रोफेसर !

परमाणु बम में फंसे प्रोफेसर ने तुम्हें ही बोलना शुरू कर दिया-

परमाणु बम नहीं बरक हुआ है ठीक उसके नीचे उसकी पाँच बेटरी, कंट्रोल बायने वगैरहा फिट हैं, जो एक अंडरग्राउंड रॉकेट से लेकर हमारे वहाँ फिट की हुई हैं। उस रॉकेट से लेकर अंतर कोर्टे उस पाँच बेटरी और कंट्रोल बायनों को जल दे, जे बम को फटने से रोका जा सकता है...

... लेकिन ऐसा होना दुर्लभ अवसर है क्योंकि एक ही क्षण समय तक वहाँ एक पहुँचने वाले अंडरग्राउंड रॉकेट पर फटने को तैयार परमाणु बम से अनंत हुई सभी का तपसाल काभी अधिक ही बाधा होगा, जिसे अब अच्युती नहीं सह सकता...



... और ऊपर से निकले दो मिलने में कोई भी दुर्लभ परमाणु बम के नीचे फिट उस बेटरी व बायनों तक नहीं पहुँच सकता क्योंकि वे सभी बम के काकी अच्युती हिस्से में लगी हुई हैं, वहाँ तक पहुँचने के लिए काफी सरसाल को खोलना पड़ेगा जो हमने कम समय में हमारा नहीं हो सकता। फिर बलओ कोर्टे समुच्च वहाँ तक कैसे पहुँच सकता है।

अजय कुछ भी हो प्रोफेसर, मैं वहाँ तक पहुँचने की कोशिश करूँगा।

जय ही नागराज परमाणु बम के ठीक नीचे पहुँचने वाले अंडरग्राउंड रॉकेट पर भाग जा रहा था -



अच्युतक अवाता - अवाता नागराज औरों सुंदर गिरा-

सचमुच यहाँ काकी नहीं है। लेकिन मेरे शरीर पर नलों की विशेष खल होने की वजह से मैं इसे कुछ समय तक उबर सह सकता हूँ, और वही कुछ समय मेरे लिए काफी होगा।



महाराज भौचक का यह शस्त्र—

मेरे शरीर से अपने-आप निकल कर ये सर्प मेरे पैरों से लिपट गए और इन्होंने मुझे घिरा दिया...

... और, ये क्या? मेरे शरीर से तो बहुत से सर्प बाहर निकल रहे हैं!



और... और ये क्या? ये तो मेरे शरीर से उकड़ते आ रहे हैं!

लेकिन ये सर्प मरणात्मक मेरे शरीर से निकले हैं मेरी महाशक्ति का तो...



कितना हानि परभाव इस के सिवा मेरे पास कुछ भी बचने का समय नहीं है। इसलिए मुझे इस महाशक्ति से तुम्हारी शर्तों को अलग करना है।

ओह नहीं... ये ये मेरी महाशक्ति में शामिल नहीं हैं ही नहीं। इस जति और इस किस्म के सर्पों से मेरे शरीर में तो कभी अंधेरा नहीं किया...

... उह! क्या धक्का है ये? किसकी महाशक्तियों से शरीर में घुस कर रही हैं और... और ऐसे मौके पर निकलकर मुझे उकड़कर रोकने का प्रयत्न कर रही हैं अब तबलों जिन्हीं की और महाराज का शस्त्र-सम्पन्न खतरे में है।



यक शक्ति से महाशक्तियों से अलग हुआ महाराज तो...

... उसे शक्ति और महाशक्ति का सम्पर्क करना पड़ा—



ओह! मेरे शक्ति पर फिट कोड़ ही की होने का प्रयत्न कर रहा है। लेकिन अब मुझे...

... किन्ती भी हालत में रोना नहीं दूँगे देना!

... इस तरीके से मेरे लिए मैं बोट ली अगर लगेगी, लेकिन अपने पा हींकी होती दुश्मिने से सिघरने का एक वही साधन है!



दृष्टार से फिर काफ़कन जागराज आगे बढ़ा तो उसे एक बार फिर जागराजसी ने जकड़ लिया --

उर्र! फिर तुम्हीं लारा दुश्मिनों ने मेरा सम्पन्न होक लिउ... उर्र! जबकि बस फटले में सिर्फ कुछ ही सेकेंड बाकी हैं!



और दृष्टारने कल समय में मुझे सम्पले सिघरने बस के ठीक तीरे पहुँचने के लिए एक सम्पन्न अवसर होगा!

जमीन पर लोट लाराकर तेजी से लुक्कने लारा नागराज --



और फिर एक अन्तका रोज़ाफ़ एक राफ़ --

उर्र! बेर लगे लारा मजदूरी से उस लवने से लिपट गलहें, जारा अब मुझे आगे बघुना है तो उन लारों की लवने से अलगा करक होगा!



... अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करके !

नगरराज ने अपनी पूरी शक्ति नवा दी -



... नहीं ! हो सकता है, मैं अपनी दुश्मना-धारी शक्ति से बहुत कुछ कर सकता हूँ ! आज नगरराज की रक्त के लिए मुझे अपनी शक्ति तक जान लेवनी ही होगी ! \*



और नगरी की अकड़ से घूटकर मरणा भया -



उसके पीछे अनेक अन्य नगा भी -

लेकिन वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया -

उफ ! नगरराजियों की धकड़ काफ़ी मजबूत है, मैं इसके नहीं घुट पा रहा हूँ ... और वेमो की अण्ड में किसी तरह घुट भी गया तो भी क्या होगा ! मैं उस धोटे से हस्तों से घुलकर बल की सटीकरी तक ले पहुँच नहीं पाऊँगा !

अब कुछ नहीं हो सकता, वन के फाले में कुछ ही सेकण्ड बाकी है और मैं बिलकुल अभयाप हो - अब मरना ही है ...



अब बस अपनी दुश्मनाधारी शक्ति का इस्तेमाल करने में नगरराज सफल क्यों होगा -



अद से मनुष्य में नगा में परिवर्तित हुआ नगरराज -

**हिंस्र**

लेकिन नागराज अब शाप आने वाली में से कहां था—



बहु तेजी से सामने दिखते सिकरे सन्ने में प्रवेश कर रहा था—

लेकिन अब— अब हमला टल चुका था—



परमणु बम सक्रिय हो चुका था—

और ब्रह्म काम की अंजानदे के कला च नागराज, जो नागराज में संकटे सन्ने से बाहर निकल—



बम की सही तरी में प्रवेश करने के साथ ही अब नागराज को पहला काम करना था ऑफ बेटरी और कंप्यूटर वायरों को काटने का—



और ब्रह्म काम की काले में उसने एक अणु का मौ का हिस्सा भी ले नहीं सका था—

क्योंकि वह अचभूरी तरह जानता था कि समय संभालने का एक ही समाधान था उसकी और लोगों से लड़ने की क्षमता—

अपने अस्सी रूप में वापस आ गया—



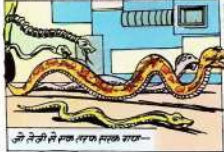
मैंने वजह से ऐसा हुआ संकट अब टल गया है!





कुशलिय अउ मसज दे उह देरले का कि मेरी नगराजकियो कां मेरे बुकवे पर उयो नहीं आई ? कौन दे ओ मेरे मलिकका को अउने बडा में का लेता है, अउ कियकी हूँ वे नगराजकियो कां मेरे शरीर में कास का रही हूँ

उहरीं के साथ निकलता वह अयोका कास भी-



ओ लेती से एक तरफ तरफ राख-



... मैं ओ तुम्हारे शरीर से बाहर निकल ले वे ओ मेरे साथ ही निकल गईं!

नगराज ! त... तुम !



... ये सब जतले के लिए मुझे अपनी जोश क्रिया का सहारा लेना होगा !

नगराज जोश मुझ में बैठ राख-

धीरे- धीरे उसके शरीर से निकलने लगीं सभी नगराजकियो -

नगराज से अपनी ओखें खोलतीं ले वह हैसल रस राख-



ओह ! ये सब ले मेरी ही नगराजकियो हैं ! ले वे नगराजकियो कां गईं ओ मेरे शरीर से निकलका मेरे ही शिरवु हो गईं थीं !

वे शकियो मेरी थीं, नगराज !

हाँ, नगराज मैं ! मैं ही तुम्हारी उन नगराजकियो के साथ नगराज में तुम्हारे शरीर में उस मसज लग्य राख था, जब वे मेरे मेरे शरीर तुम्हारे को मसज तुम्हारे शरीर में लग गईं थीं !

और अब मैं तुम्हारे डायरी में  
जमा ही राख रहा था, लेकिन मेरे लिए  
तुम्हारी जवाबदारी थी और तुम्हारे  
सिद्धि के पर कब्जा करना जो  
तो बुरी बात थी !

और फिर मुझे ज्ञान हुआ  
कि किसी संजाना और सब-  
राज के हथियार का बिलाल !

सब बात और तुम्हारे  
दिमाग में खलबली मचा  
रही होगी नागराज, और  
वो ये कि मैं अर्धशरी के  
जाना सुरती से बचकर  
आने निकल आया ?

दुमका सीधा सा जवाब यह  
है कि जिन मजदूर-जवानोंकी  
कटा उस समय में जवान-  
सुरती में था ही नहीं। मैं तो  
उसमें कहीं पहुँचे ही नासक  
पुछकर कर ...



और इसके पीछे मेरा  
उद्देश्य यह था कि मैं तुम्हें यहाँ  
विद्युत में दुमका जवान का रास्ता  
जहाँ था कि तुम सब ही आज्ञाकारी  
करने के लिए मजबूर हो जाले !

श्रेष्ठ से फुंकार उठा नागराज -



अच्छा हुआ मैंने  
सभी सवालों का जवाब  
दे दिया नासक, जहाँ  
मुझे ये मजदूर जीवजन्म  
रहता कि मेरे साथ ही  
मेरे सभी सवाल सवाल  
हो गए !

... जहाँ मैं लड़ी मैं जिन  
जवानों हुआ वहाँ मैं बहुत  
सुखी कर रहा था -

और नागराजिले के  
जिन मैं नासक के सवाल  
सवाल मचाने है। जिनकी  
सर्वेज जवानों अब लगे  
मरोड़ सकता है।

बाद करने को अगले बड़ा नागराज ...

... लेकिन वाद करने में  
सफल हुआ नासक -

**धुं**



हाहाहा ! मैं मुझे अपने नागराज,  
अबकि अब तेरा मेरा कोई मुकाबला  
महो है, मेरी सभी जवाबदारी  
मेरे बड़ा में यहाँ पड़ी है।



इस विष फुंकार का अभाव किसी हॉर-होर आत्तुखैरे को आकर दिखता नाराज। नारावत के सजने अब तेरी एक नहीं चला सकती।

नारावत के सजने और एक कालित ही रहा नाराज...



... उधावा देर नहीं टिक पाया—

नारावत का अजला वार तेरी जिंदाता सजान कर सकता है नाराज! लेकिन नहीं, एक अटक में तुझे और देकर मैं तेरी मौत को आनंद नहीं बनता चहुँदा मैंने तेरी विष देगी और मौत सोच राखी है जिसमें तु मिल-मिल करके लगेगा।

धरत से देर नाराज, आज ओ तुके और देने अग्री हूँ तेरी ही नाराजकित्तों हैं तेरी ही हारी में वार करके वल्ले आवा कांसी के फंदे के रूप में तेरे शाने में पहुँचे और उन्हीं के देर पर व सदा हुआ है, और उन्हीं-उन्हीं एक-एक करके ते देर के रूप में तेरे पैरों के नीचे लौडूद आवा वहाँ से मारकर रहेंगे त्यों-उन्हीं और तेरे लजवीक आरी उगी आगयी।

और आलों के देर के पूरी तरह हलके के साथ ही कांसी के फंदे से लटककर ही आगवा...

नाराज का और! हो हा हा!



तुम को नागराज का रूप मैंने यानी प्रोफेसर नागमणि ने दिया है नागराज... और अगर मैं तुमको बनाने का तरीका जानता हूँ, तो तुमको खत्म करने का रास्ता भी जानता हूँ।

तुझे मारने के लिए चार तरह के जहरों का तेरे खून में मिलना जरूरी है। मेरे पैदा किए हुए दो जहरीले प्राणी तो तुझे काटकर गल गए। तीसरा तुझे काट रहा है। अब जब चौथा जहर तेरे खून में मिलेगा तो साथ ही साथ, तेरी आत्मा भी परमात्मा से मिल जाएगी।

नागमणि सच कह रहा है। इन तीन जहरों के मिश्रण से मेरे शरीर को लकड़ा सा मार गया है।...पर वह चौथे जहरीले प्राणी कौन है और कहाँ है?

...वह चौथा प्राणी जब नागराज के सामने आएगा तो नागराज के साथ, आप सबकी आंखें भी फटी रह जाएंगी।

नागराज का एक जहरबुझा विशेषांक जो खोलेगा कई रहस्यों की परतें-

# जहर